*30*

# मानवीय दुविधा

## *( 7:14 )*

इस और अगले पाठ में रोमियों 7:14-25 में बात की जाएगी। इन दोनों अध्ययनों को आरम्भ करने से पहले मैं चाहता हूं कि आप इन आयतों को पढ़ लें। ... क्या आपने पढ़ ली हैं?[1] यदि पढ़ ली हैं तो इस पद्य का आप पर क्या प्रभाव पड़ा है? इसमें आपके लिए क्या संदेश है? ... यदि आप सोच समझकर प्रभु की सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं तो आपका प्रत्युत्तर कुछ इस प्रकार हो सकता है: "मुझे मालूम है कि पौलुस को कैसे लगा होगा! मुझे भी वैसा ही लगा!"

रोमियों 7:14-25 की एक दिलचस्प बात यह है कि अधिकतर गैर-विद्वान इस पद्य को सरल और स्पष्ट समझते हैं। पौलुस की कुछ शब्दावली उन्हें उलझा सकती है, परन्तु वे इस प्रेरित की परेशानी को समझते हैं, जब उसने लिखा:

> ... जो मैं करता हूं, उस को नहीं जानता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूं। ... इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। क्योंकि जिस अच्छे काम की इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं। ...
>
> मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! (आयतें 15ख-24क)।

इसलिए आपको यह जानकार आश्चर्य हो सकता है कि विद्वानों में 7:1-25 "रोमियों की पुस्तक के सबसे अधिक विवादास्पद में से एक" है।[2] जे. डब्ल्यू. मैक्गुइगन ने इसे "व्याख्या के लिए इस पद का सबसे कठिन पद्य कहा है।"[3] आर. सी. बेल का अवलोकन है कि रोमियों 7 को "पुस्तक का परेशानी देने वाला अध्याय कहा गया है।"[4] जेम्स एडवर्ड्स ने लिखा है, "व्याख्याकर्ताओं की उतेजना कहीं पर भी ऊंचे उछाल तक नहीं पहुंचती।"[5]

इस वचनपाठ के आस-पास इतना अधिक विवाद होने के कारण मैं इस पाठ में पाई जाने वाली समस्या पर बात करूंगा। अगले पाठ में हम 7:14-25 का अध्ययन पूरा करेंगे।

## समस्या बताई गई

### मुख्य विवाद

यह सब क्या गड़बड़ है? जैसा कि पिछले पाठ में ध्यान दिया गया था कि अधिकतर विवाद इस बात पर है कि रोमियों 7:14-25 में पौलुस का "मैं" से क्या अभिप्राय था। क्या वह व्यक्तिगत अनुभवों की बात कर रहा था या अपनी बात समझाने के लिए, इन शिक्षाओं को अपने ऊपर "प्रतीकात्मक अर्थ में लागू कर रहा" था (देखें 1 कुरिन्थियों 4:6)? पिछले पाठ में मेरा निष्कर्ष

यह था कि पौलुस अपनी बात कर रहा था, परन्तु जो बात उस पर लागू होती है वही दूसरों पर भी लागू होती है। विवाद का एक और पहलू यह है कि पौलुस के मन में मसीही बनने के *पूर्व* के अनुभव थे या मसीही बनने के *बाद* के।

दूसरी और तीसरी शताब्दियों में अधिकतर मसीही लेखकों का मानना था कि पौलुस मसीही बनने की पूर्व की स्थिति की बात कर रहा था। फिर अगस्टिन से आरम्भ करके यह वचन परिपक्व मसीही लोगों की अंदरूनी कशमकश के वर्णन के लिए प्रसिद्ध हो गया। आज इन दो विचारों पर असंख्य परिवर्तन मिल जाते हैं–वे परिवर्तन जिनका इनकी शिक्षा देने वाले लोग आक्रामक रूप से बचाव करते हैं। रिचर्ड रोजर्स ने सतर्क किया है, ''प्रश्न के दोनों ओर भले और महान लोग खड़े हैं और खड़े हुए हैं, और जब किसी पद्य पर अच्छे मसीही लोगों में अन्तर हो, तो बहुत हठधर्मी होना हमारे लिए अच्छा नहीं होगा।''[6]

रोमियों 7 को समझने के कई ढंगों की सूची देने और उनमें से प्रत्येक के पक्ष और प्रथम पक्ष के विचार देने के लिए और समय और स्थान की आवश्यकता होगी। परन्तु कुछ टिप्पणियां काफ़ी हैं।

जो लोग यह मानते हैं कि पौलुस के मन में मन परिवर्तन के पश्चात की स्थिति थी तो वे यह ध्यान दिलाते हैं कि आयत 14 पिछली आयतों के *भूतकाल* (''पाप ने ... मुझे बहकाया''; आयत 11) से वर्तमान काल में आ जाती है ''मैं करता हूं''; आयत 20. प्रेरित यह ज़ोर देते हैं कि प्रेरित वर्तमान में अपनी ही बात कर रहा होगा। अन्य शब्दों में वह एक मसीही के रूप में अपने बारे में ही बता रहा होगा। यह निर्णायक तर्क नहीं है क्योंकि लोग आम तौर पर अतीत की कोई बात ऐसे करते हैं जैसे यह वर्तमान में हो रही हो (तुलना मत्ती 17:11 और 17:12)। अंग्रेज़ी में इसे ''ऐतिहासिक वर्तमान'' कहा जाता है।[7]

मेरा विचार है कि पौलुस मसीही बनने से *पूर्व* के व्यक्तिगत अनुभव बता रहा था। हमारे वचनपाठ में उसने कहा कि वह ''पाप के हाथ बिका हुआ'' था (रोमियों 7:14), परन्तु पहले उसने कहा था कि मसीही बनने पर वह ''पाप से छूट गया'' था (6:7; देखें आयत 14)। फिर पौलुस ने ''पाप की व्यवस्था के बंधन में होने की बात की'' (7:23); परन्तु अगले अध्याय में उसने ज़ोर दिया कि जो लोग *मसीह में* हैं वे ''पाप की ... व्यवस्था से स्वतन्त्र'' हो गए हैं (8:2)।

मन परिवर्तन से पूर्व की स्थिति पर एक आपत्ति यह है कि रोमियों 7 में पौलुस द्वारा दिखाई गई अंदरूनी कशमकश मसीही बनने से पूर्व की उसकी यहूदी सोच के बारे में पौलुस की अन्य बातों से मेल खाती प्रतीत नहीं होती। अपनी यहूदी पृष्ठभूमि के बारे में, फिलिप्पियों 3:6ख में उसने अपने बारे में इन शब्दों में बताया: ''व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था।'' प्रेरितों 23:1 में यहूदी सभा को बताया, ''हे भाइयो मैंने आज तक बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।''

शायद यह झगड़ा वास्तविक से अधिक अवास्तविक है। फिलिप्पियों के पद्य में, पौलुस सिद्धता का दावा नहीं कर रहा था। वह केवल इतना कह रहा था कि मूसा द्वारा दिए गए संस्कार या उस कर्मकांड की बात नहीं की जा सकती, जिसे वह पूरा नहीं कर पाया। इसी प्रकार ''शुद्ध विवेक'' वाली बात के विषय में पौलुस यह ज़ोर नहीं दे रहा था कि उसने कभी कोई गलती नहीं की या कभी गलत महसूस नहीं किया। बल्कि वह यह घोषणा कर रहा था कि अपने विवेक की बात

सुनने की उसने हमेशा कोशिश की।

नया नियम रोमियों 7:14-25 में दिखाए गए पौलुस के भीतरी संघर्ष जैसा और कोई संघर्ष देने का संकेत नहीं देता।[8] इस पद्य को शायद हमें पौलुस की भावनाओं की अतिरिज़्त समझ देने के रूप में देखना चाहिए। जो पवित्र शास्त्र में केवल यहीं पर मिलती है। हो सकता है पौलुस उन भावनाओं को बता रहा हो जो यीशु से भेंट से पूर्व उसके मन में थीं. (दमिश्क में तड़प के तीन दिनों के दौरान पौलुस के मन में आने वाले ऐसे ही विचारों की कल्पना करना कठिन नहीं है [प्रेरितों 9:9]।) पौलुस शायद अपनी वर्तमान मसीही आंखों से अपने पिछले यहूदी जीवन को देख रहा था। जो भी हो मुझे लगता है कि हमारे वचनपाठ में पौलुस का मुज़्य विचार केवल अपनी सामर्थ पर निर्भर रहकर व्यवस्था की मांगों को पूरा करने की कोशिश की उसकी परेशानी है।

## मनुष्यजाति की स्थिति

इसके साथ ही मैं विद्वानों के विचार के लिए मिलने वाली रोमियों 7:14-25 की सार्वभौमिकता को भी समझता हूं। इन आयतों के सज़्बन्ध में जे. डी. थॉमस ने लिखा:

> मानव-विज्ञान के मनोविज्ञान पर किसी लेखक का कोई लेख मानवीय स्वभाव और परीक्षा की प्रक्रिया में वास्तव में होने वाली बातों के बारे में इन आयतों से बेहतर नहीं लिख पाया है। ... अपनी बात को समझाने के लिए पौलुस अपनी बात करने के लिए ["मैं"] का इस्तेमाल करता है। परन्तु यह हम सब पर लागू होती है।[9]

आरज़्भिक लेखों से लेकर आज के लेखों तक, मनुष्यजति के अंदरूनी संघर्षों की गवाहियों की भरमार है।[10] *डॉज़्टर जेकिल एण्ड मिस्टर हाइड* की रॉबर्ट लूइस स्टीफन्सन की उत्कृष्ट कहानी में भीतरी कशमकश का एक बेहतरीन उदाहरण है।[11] हाल ही की एक "वेस्टर्न" फिल्म में[12] एक धर्मत्यागी भारतीय नायक को चुनौती देता है, "तुज़्हारे अन्दर दो कुज़े हैं। एक बुरा है और दूसरा अच्छा है। बुरा कुज़ा हर समय अच्छे कुज़े से लड़ता रहता है। ... इनमें से जीतेगा कौन?" पहले तो नायक ने कहा, "मुझे नहीं मालूम"; परन्तु फिर उस ने यह निष्कर्ष निकाला: "जिसे मैं अधिक खिलाऊंगा।"

बेशक जिस झगड़े की बात में पौलुस ने लिखा वह उदाहरणों में दिए गए झगड़े जैसा नहीं था। वे झगड़े *बुरा* करने की अंदरूनी इच्छा में शामिल थे, जबकि पौलुस का झगड़ा केवल *भलाई* करने की मन से इच्छा का है यानी यह वह इच्छा थी जिसे वह एक साथ पूरा नहीं कर सकता था। "पौलुस के मन का संघर्ष मनुष्यजाति के संघर्षों से मेल खाता है, जिससे हम सब इसे अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।"

## एक अर्थ-भरपूर टिप्पणी

हमें रोमियों 7:14-25 में दिए गए पौलुस के उद्देश्य को कम नहीं समझना चाहिए। उसका उद्देश्य अपने व्यज़्तिगत संघर्षों के बारे में हमारी सहानुभूति लेना या हमें मानवीय मनोविज्ञान की समझ देना नहीं है। अभी भी उसका ध्यान व्यवस्था पर था (देखें आयतें 14, 16, 22, 25)। 1 से 6 आयतों में उसने लिखा था कि लोगों को "व्यवस्था से छुड़ाया गया" था (आयत 2)। ज़्या इसका

अर्थ यह है कि व्यवस्था बुरी थी? नहीं। 7 से 13 आयतों में पौलुस ने यह कहते हुए व्यवस्था का बचाव किया कि अपने आप में यह अच्छी थी, परन्तु ज़्योंकि पाप (शैतान) ने आज्ञा तोड़ने के लिए बहकाने के लिए व्यवस्था का *इस्तेमाल किया* था। अब 14 से 25 आयतों में पौलुस यह कहते हुए कि मुज़्य समस्या व्यवस्था थी, अपनी चर्चा को समाप्त कर रहा था कि एक बार पाप करने पर व्यवस्था उस पाप के दोष को हटाने में असमर्थ थी।

14 से 25 आयतें अपनी ही सामर्थ के द्वारा भला करने या भला बनने की कोशिश करते हुए व्यवस्था के अधीन व्यज़्ति का चित्रण करती हैं। ध्यान दें कि हमारे वचनपाठ में व्यज़्तिवाचक सर्वनाम "मैं" कितनी बार आता है। यह पद्य अगले भाग से बिल्कुल अलग है। अध्याय 7 दिखाता है कि "मैं" अकेला ज़्या *नहीं* कर सकता। अध्याय 8 बताता है कि "मैं" पवित्र आत्मा *के साथ* ज़्या कर *सकता* है।

ज़्या हमारे वचनपाठ से और सामान्य प्रासंगिकता बनाई जा सकती है? नि:संदेह। विश्वासी मसीही कई बार परमेश्वर द्वारा दिए आत्मिक संसाधनों की उपेक्षा करके अपनी ही सामर्थ से भलाई करने की कोशिश करते हैं। इस पद्य को लागू करते हुए, हमें व्यवस्था पर दिए गए पौलुस के ज़ोर को कम नहीं समझना चाहिए।

## पद्य की समीक्षा की गई (7:14)

### पौलुस की प्रशंसा

वचनपाठ के आरज़्भ में हम पौलुस को व्यवस्था का बचाव जारी रखते देखते हैं। उसने कहा, "हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है" (आयत 14क)। उसने बहुवचन "हम" शज़्द का इस्तेमाल किया ज़्योंकि उसे मालूम था कि सब नहीं तो उसके अधिकतर पाठक तो उसकी बात से सहमत होंगे। उसने ज़ोर दिया कि व्यवस्था *pneumatikos* अर्थात "आत्मिक" थी। जिज़्मी एलन ने लिखा है कि व्यवस्था कई प्रकार से आत्मिक थी:

> स्रोत में-यह परमेश्वर द्वारा दी गई थी (तुलना 1 कुरिन्थियों 10:3-4)।
> उद्देश्य में-यह लोगों के आत्मिक विकास के उद्देश्य से दी गई थी।
> सज़्बोधन में-यह लोगों की आत्माओं से बात करती थी।[13]

### पौलुस की दशा

"परन्तु," पौलुस ने कहा कि "*मैं* शारीरिक हूं" (7:14ख)। "शारीरिक" का अनुवाद *sarkinos* से किया गया है,[14] जो "शरीर" (*sarx*) के लिए शज़्द से लिया गया है। *Sarkinos* का मुज़्य अर्थ "जो शरीर का है, शरीर से बना" है।[15] आयत 14 में KJV में "शरीर" के लिए लातीनी शज़्द से "carnal" है, परन्तु आज "carnal" शज़्द प्रचलित नहीं है। "आत्मिक" व्यवस्था से अन्तर पर ज़ोर देते हुए NIV में "unspiritual" है। (इस पुस्तक में आगे शज़्द अध्ययन देखें।)

जब पौलुस ने कहा कि "मैं शारीरिक हूं," तो वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि वह कितना

*कमज़ोर* है। अगली आयतें व्यक्ति के *अपने दम पर* पाप की चुनौती का सामना करने की कोशिश करके बुरी तरह से असफल रहने का वर्णन करती हैं। जैसा कि पिछले पाठ में बताया गया था कि पौलुस ने ज़ोर दिया कि दिक़्क़त *व्यवस्था* की नहीं। इसके विपरीत समस्या तो *वही* थी।

यह कहकर कि वह "पाप के हाथ बिका हुआ" था (आयत 14ग) उसने अपने असहाय होने का संक्षेप विश्लेषण पूरा किया। गुलामों की मण्डी का रूपक फिर से पाप के साथ मेल खाता है। नीलामीकर्ज़ा का हथौड़ा बज चुका था और पौलुस पाप का दास था (देखें 6:6, 17, 20)।

समस्या यह थी कि पौलुस व्यवस्था का पूरी तरह से पालन नहीं कर पाया। व्यवस्था तो पूरी थी, परन्तु वह पूरा नहीं था। सद्भावना बहुत कम थी। अगले पाठ के वचनपाठ में अपने अध्ययन में हम देखेंगे कि कितनी कम थी।

## सारांश

*पीनटस* नामक एक कॉमिक दृश्य में चार्ली ब्राउन के लूसी के "मनोचिकित्सकीय स्टैंड" तक चलकर आया। लूसी ने कहा, "फिर से निराश, चार्ली ब्राउन?" फिर उसने कहा, "तुम्हारी दिक़्क़त यह है कि तुम तुम हो।" चार्ली ब्राउन ने उज़र दिया, "संसार में मैं इसका ज़्या कर सकता हूं?" लूसी ने कहा, "मैं तुम्हें सलाह देने का नाटक नहीं करती मैं तो केवल समस्या की ओर ध्यान दिला रही हूं।"[16] जो कुछ लूसी ने किया वही व्यवस्था ने किया था। इसलिए समस्या की ओर ध्यान दिलाया परन्तु कोई वास्तविक या स्थाई समाधान नहीं किया।

रोमियों 7 में पौलुस का ज़ोर मूसा की व्यवस्था पर था; परन्तु एक अर्थ में वह उस व्यवस्था के विषय में जो कुछ उसने कहा वह किसी भी व्यवस्था के लिए कहा जा सकता है। व्यवस्था समस्या को बता सकती है। परन्तु जब हम इसकी आज्ञाओं को तोड़ते हैं तो दोष को हटाना व्यवस्था के स्वभाव में नहीं है। शरीर की निर्बलता के कारण हम व्यवस्था को, चाहे कोई भी व्यवस्था हो, पूरी तरह से नहीं मान सकते। यही कारण है कि हमें मसीह की इतनी अधिक आवश्यकता है (देखें 7:25क)। मसीह के बिना हम केवल यही पुकार सकते हैं, "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं" (आयत 24क)।

## सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन का इस्तेमाल करने पर अपने सुनने वालों को बताएं कि वे "मसीह में" कैसे आ सकते हैं (रोमियों 6:3-6)।

टिप्पणियां

[1]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में करते हैं, तो क्लास का आरम्भ रोमियों 7:14-25 को या कम से कम मुख्य आयतों को ऊंची आवाज में पढ़ने के लिए करें। क्लास के लोगों को अपनी प्रतिक्रियाएं देने के लिए कहें। [2]डग्लस जे. मू, *रोमन्स*, दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 233. [3]जे. डब्ल्यू. मैज़्गोरमन, "रोमियों 7" *साउथ वेस्टर्न जरनल ऑफ़ थियोलॉजी* (फॉल 1976): 31. [4]आर. सी. बैल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 63. [5]जेम्स आर.

एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 184. [6]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 103. [7]वही, 106. मनपरिवर्तन के बाद की व्याख्या अन्य तत्वों पर वचनपाठ की चर्चा पर तैयार की जाएगी। [8]यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि औसतन यहूदी के मन में ऐसी दुविधा नहीं होती थी (देखें रोमियों 10:1-4). [9]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 51-52. [10]ऐसे एक या दो उदाहरणों का इस्तेमाल करें, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों।

[11]यह उदाहरण जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 53 में दिया गया था। [12]रॉन हावर्ड, प्रोड., *दि मिसिंग* (सैंटा मोनिका, कैलिफोर्निया: रेवोल्यूशन स्टुडियोस, 2003)। [13]जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 72. [14]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में सञ्बन्धित शब्द ***sarkikos*** है, परन्तु हस्तलिपि का प्रमाण ***sarkinos*** के पक्ष में है। [15]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम्म, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट, अनु. व संशो. जोसेफ हैनरी थेयर* (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 569. [16]टाउनसेंड, 57.